Date 8/7/20 B.A. Part I

Paper - I

Lecture - 38

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor
Marwari College Darbhanga

TOPIC - समाजीकरण के चरण

Scanned with CamScanner

परिस्थिति कहते हैं कि माता व शिशु की एक इकाई इस stage में बन जाती है। बच्चा अपने आपको माँ से अलग नहीं कर पाता है। माँ की गोद में उसे कुछ ऐसी अनुभूति होती है जो उसे काफी अच्छी लगती है। फ्रॉयड ने इस स्थिति को प्राथमिक परिचय (Primary Identification) कहा है।

2. गुद स्तर या गुदावस्था या शौच सोपान (Anal Stage) – यह अवस्था एक साल से छः साल तक की होती है तथा इस अवस्था में बच्चे सामाजिक रूप से अनुमोदित व्यवहार तथा प्रतिबंधित व्यवहार में अन्तर को समझने लगते हैं। इस अवस्था में बच्चों में स्वतंत्र रूप से कार्य करने की इच्छा विकसित हो जाती है उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान होने लगता है और इस तरह से उनमें सामाजिक विभेद करने की क्षमता विकसित हो जाती है।

3. मातृरति स्तर या ऑडिपस सोपान (The Oedipal stage) – मनोवैज्ञानिकों

Scanned with CamScanner

में इस चरण को ओडिपल संकट का काल कहा है। यहाँ यह जान लेना उपयुक्त होगा कि ओडिपस ग्रीक साहित्य का एक ऐसा किरदार था। जिसने अनजाने में अपनी माँ से विवाह किया था और इलेक्ट्रा एक ऐसी नायिका थी जिसने अनजाने में अपने पिता के साथ सहवास किया था।

ओडिपल संकट प्रायः चार वर्ष से आरम्भ हो जाता है और पाँच वर्ष या अधिक से अधिक छः वर्ष तक रहता है उसके बाद गुप्तावस्था काल शुरू हो जाता है इस काल में बालक यौन-भेद की ओर सहज आकर्षण का अनुभव करता है तथा इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स जन्म लेते हैं।

3. किशोरावस्था (Adolescence) — यह अवस्था 13 वर्ष से आरम्भ होकर 19 साल तक की होती है। यह वह काल होता है जब लड़का न तो छोटा बच्चा होता है और न ही युवक। वह सीमान्त संस्कृति पर होता है। यह स्थिति उसके जीवन में उद्गतीकरण के रूप में अभिव्यक्त होती है क्योंकि कई छोटे

दोनों के अन्तर्गत उसको पूर्ण मन स्वीकार नहीं किया जाता।

सामान्य रूप से यह माना जाता रहा है कि किशोरावस्था में लड़के लड़कियों के शारीरिक परिवर्तन के कारण विभिन्न प्रकार के तनाव होते हैं।

ये चार समायोजन के मुख्य सोपान हैं। इन सोपानों के पश्चात भी अन्य तीन stages होती हैं जो निम्नांकित हैं —